दादा भगवान परिवार का

जुलाई २०२१

शुल्क प्रति नकल : ₹ २०/-

अक्रम एक्सप्रेस

पॉकेट मनी

संपादकीय

प्यारे मित्रों,

हम सभी तो पैसे को पहचानते ही हैं, न? हम पैसे से अपनी मनपसंद चीज़ें खरीदकर खुश हो सकते हैं। लेकिन क्या पैसों से सभी मनपसंद चीज़ें खरीदी जा सकती हैं? नहीं! वास्तव में जीवन की सब से कीमती चीज़ें अमूल्य होती हैं जो पैसों से कभी नहीं खरीदी जा सकतीं।

चलो, इस अंक में उन अमूल्य चीज़ों के बारे में जाने।

और साथ ही यदि हमें कभी अपने पर्सनल खर्च के लिए पैसे यानी कि पॉकेट मनी मिले तो उसका सही उपयोग करने का तरीका सीखें और पॉकेट मनी के थोड़े से पैसों से अमूल्य खज़ाना प्राप्त करने का रास्ता ढूँढ निकालें।

- डिम्पलभाई मेहता

अक्रम एक्सप्रेस

वर्ष : ९ अंक : ३
अखंड क्रमांक : १००
जुलाई २०२१

संपर्कसूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : ९३२८६६११६६/७७
email:akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org

Editor : Dimple Mehta

Printer & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Printed at
Amba Multiprint
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar - 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist-Gandhinagar.

© 2021, Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved

ज्ञानी कहते हैं...

प्रश्नकर्ता : मेरे पेरेंट्स मुझे पॉकेट मनी देते हैं। पॉकेट मनी में मिलने वाले पैसों को खर्च करने और उन्हें जमा करने के लिए मुझे क्या ध्यान में रखना चाहिए?

पूज्यश्री : मेरे पापा भी मुझे पॉकेट मनी देते थे। मैं वह पैसे इकोनॉमिकली खर्च करता था। हाँ, अगर किसी की हेल्प करनी हो तो जरूर करता था। बाकी पापा को डाँटना न पड़े, इस तरह एडजेस्टमेन्ट करता था। घर पर ही अच्छा खाना मिलता हो तो फिर बाज़ार का खाना खाकर तबीयत बिगाड़ने की क्या ज़रूरत है? जिस बस स्टॉप से बस में जाने के पाँच पैसे कम लगते हों तो मैं वहीं से बस लेता था। मैं पैसे संभाल कर खर्च करता था।

प्रश्नकर्ता : मेरे फ्रेंड के पास मुझसे ज्यादा पॉकेट मनी होता है और जब वह शो ऑफ करता है तब मुझे दुःख होता है। मुझे ऐसा लगता है कि मुझे भी ज्यादा पैसे चाहिए। तो उस समय मुझे क्या करना चाहिए?

पूज्यश्री : अगर तुम्हारा फ्रेंड सात नंबर के जूते पहनता हो और तुम पाँच नंबर के जूते पहनते हो, तो तुम्हें क्या करना चाहिए? 'मैं भी सात नंबर के जूते पहनूँगा। और उसकी तरह दौड़ूँगा।' दौड़ोगे तो तुम्हारा क्या होगा? गिर जाओगे और सिर में चोट लगेगी। इसलिए हमें किसी से अपनी कम्पेरिज़न नहीं करनी चाहिए। हमें अपनी ज़रूरत और परिस्थिती के अनुसार रहना चाहिए।

आपके पेरेंट्स के पास ज़रूरत के हिसाब से ही पैसे हों और वे आपको ज़्यादा पैसे नहीं दे पाते हों तो उन्हें दुःख होता है कि, 'मेरे बच्चों की इच्छा है और हम उन्हें पैसे नहीं दे पाते हैं।' अपने मम्मी-पापा को दुःख नहीं देना चाहिए। आपको पैसे बचाकर उनसे कहना चाहिए कि, 'आप ज़्यादा पैसे देते हैं, मुझे कम पैसों की ज़रूरत है।' ऐसा सुनकर वे कितने खुश हो जाएँगे!

प्रश्नकर्ता : और यदि मेरे पास मेरे फ्रेंड से ज्यादा पॉकेट मनी हो तो मुझे उसे किस तरह से खर्च करना चाहिए?

पूज्यश्री : दिखावा नहीं करना चाहिए। अगर तुम अहंकार और रौब से घूमते रहोगे कि, "मैं होशियार हूँ, पैसे वाला हूँ, सभी से बड़ा हूँ।" तो फ्रेंड को कितना दुःख होगा?

तुम्हारा फ्रेंड जितने पैसे खर्च करता हो, तुम्हें भी ऐसे सामान्य रूप से उतने ही पैसे खर्च करने चाहिए। ताकि उसे संतोष हो कि यह मेरे जैसा ही है। उसके साथ समानता दिखाएँगे तो उसे आनंद होगा कि हम एक समान ही हैं।

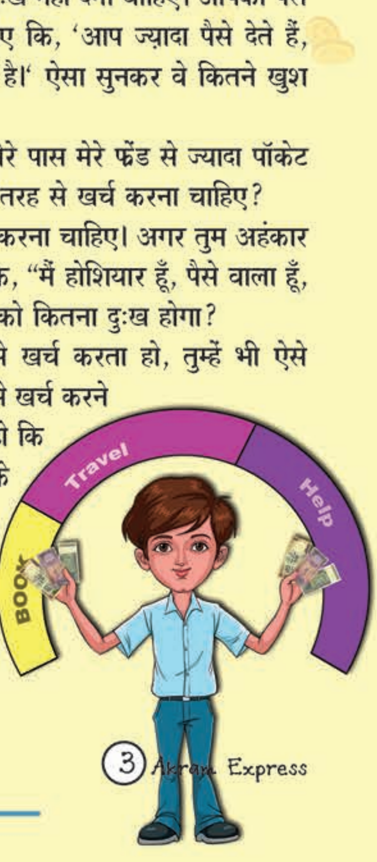

SPEND SHARE SAVE

पैसों का उपयोग

खरगोश, हाथी और चूहा पटाखों की दुकान में से बाहर निकलते हैं। चिंपू (मंकी) खिलौने की दुकान से कैरम-बोर्ड लेकर बाहर निकलता है।
तुझे पटाखे नहीं खरीदने हैं?
नहीं! मैं दीवाली में कैरम-बोर्ड खेलूँगा!
दीवाली के दिन सभी ऐनीमल्स पटाखे फोड़ रहे थे।
नॉइज़ पॉल्यूशन, एयर पॉल्यूशन,
दूसरे दिन,
पटाखे तो कल फोड़ दिए, आज क्या करेंगे?
पूरे वैकेशन में हम सभी मिलकर कैरम-बोर्ड खेलेंगे! हमेशा पैसों का सदुपयोग करना चाहिए। पटाखे तो दो मिनट में फूट जाते हैं, कैरम तो कितनी बार खेल सकते हैं!

गोल्डन विंग्स

सिटी लाइब्रेरी के ए.सी हॉल की ठंडक में बैठे हुए बच्चों को किसी का इंतज़ार था। कुछ ही क्षणों में वे अपनी सब से फैवरेट बुक के ऑथर से मिलने वाले थे।

लाइब्रेरियन मिस नैंसी ने एनाउंस किया, "चिल्ड्रन, आज के बुक साइनिंग ईवेंट में सभी का स्वागत है। आज मिस आचार्य आप सभी के साथ दिल खोलकर बातचीत करेंगी और फिर आपकी बुक में साइन करेंगी। तो प्लीज़, जॉइन मी टू वैल्कम द ऑथर ऑफ 'द गोल्डन विंग्स' (सुनहरे पंख), मिस आर्या आचार्य। बच्चों के दिल की धड़कनें बढ़ गई।

मिस आर्या ने हॉल में आते ही सभी बच्चों के सामने एक मीठी स्माइल से देखा और अपनी चेयर पर बैठ गई। माइक हाथ में लेकर कहा, "मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैं आप सभी को पहले से ही पहचानती हूँ। इस बुक के माध्यम से हमारा कनेक्शन पहले से ही हो गया है। राइट?" बच्चे एक-दूसरे के सामने देखकर मुस्कुराने लगे।

मिस आर्या ने बच्चों से कहा, "रीडिंग में आपका इंट्रेस्ट देखकर मुझे बहुत अच्छा लग रहा है!"

एक छोटी सी बच्ची ने अपनी मीठी आवाज़ में पूछा, "मैडम, मुझे भी आपके जैसा बनना है। आपको रीडिंग में इंट्रेस्ट कब से और कैसे जागा?"

मिस आर्या ने कहा, "ग्रेट क्वेश्चन! यह मेरी फैवरेट स्टोरी है। सुनोगे?" सभी ने 'हाँ' कहा।

"ईयर २००१ का समर वैकेशन था। मैं लगभग तुम लोगों की उम्र की थी। वैसे तो मैं हर साल गर्मियों की छुट्टियों में नाना जी के घर जाती थी। लेकिन उस साल का वैकेशन कुछ स्पेशल था। क्योंकि नाना जी ने मुझे और मेरे कज़िन्स को पैसे देकर एक कॉन्टेस्ट डिक्लेयर किया। और हाँ, हमें कोई छोटी-मोटी एमाउंट नहीं मिली थी, पूरे हज़ार रुपये मिले थे। कॉन्टेस्ट यह

था कि जो भी इन पैसों का बेस्ट उपयोग करेगा, उसे नाना जी दीवाली वैकेशन में 'विनर' डिक्लेयर करेंगे।

अपने बारह सालों में मैंने पहली बार हज़ार रुपये हाथ में पकड़े थे। वे पैसे अपने पर्स में रखकर मुझे 'पावरफुल' फील हुआ। क्या पैसों से पावर मिलता है? मुझे पता नहीं था। लेकिन हाँ, यह पैसे मेरे लिए क्लास में पॉप्युलर (लोकप्रिय) ग्रूप में फिट होने की टिकिट जैसे थे। मैंने अपने मन में पैसे खर्च करने के प्लान्स बना लिए और अपनी डायरी में नोट कर दिए। बचपन से ही मैं एक डायरी रखती थी, जिसमें मैं अपने विचार, अपनी आइडियाज़ और प्लान्स लिखती थी।

छटवीं कक्षा का पहला दिन था। क्लास में एक नया चेहरा दिखा। एकदम सिंपल और स्वीट। टीचर ने क्लास में सभी की पहचान ऋषा धर्मदर्शी से करवाई। लेकिन उस दिन मुझे ऋषा में कोई इंट्रेस्ट नहीं था। जब पर्स में पैसे हो तब सादी-सिंपल लड़की से दोस्ती करने का किसको मन होगा? मुझे तो क्लास की पॉप्यूलर लड़कियों के ग्रूप में जुड़ना था। उनके साथ कैंटीन में नाश्ता करना था। उनके जैसा बनना था। इन शॉर्ट, मुझे चाहिए था कि वे लोग मुझे स्वीकार करें।

मैंने अवनी से पूछा, "मैं आज रिसेस में तुम लोगों के साथ कैंटीन में आऊँ?"

"हाँ, श्योर! व्हाय नॉट! जॉइन अस," अवनी ने मुझे जवाब दिया और साथ ही अपनी दूसरी फ्रेंड से कहा, "यार, डेज़ी को छोड़ दे! आज से वह हमारे साथ कैंटीन में नहीं आएगी। उसके डैडी ने उसे पॉकेट मनी देना बंद कर दिया है।" और दोनों लड़कियाँ हँसने लगीं।

उस समय मुझे थोड़ी घबराहट हुई, "यानी कि जब मेरे पैसे खत्म हो जाएँगे तब ये लोग मुझे भी छोड़ देंगे? इनकी फ्रेंडशिप तभी तक टिकेगी जब तक मेरे पास पैसे होंगे?" विचारों पर पॉज़ बटन दबाकर मैं उनके साथ नाश्ता करने गई। किसी भी हिचकिचाहट के बगैर मैंने पहली बार कैंटीन में बर्गर, चिप्स और कोल्डड्रिंक्स खरीदे। लेकिन पता नहीं क्यों, मैंने जितना सोचा था उतना मज़ा नहीं आया!

उस दिन मैंने रात को डायरी में सारे दिन की घटनाओं के अलावा, पॉकेट मनी स्पेंड करने का एक नया सॉलिड प्लान भी लिखा। मेरे प्लान में ऋषा धर्मदर्शी के साथ फ्रेंडशिप करने का कोई उल्लेख नहीं था। लेकिन बिना किसी प्रयत्न के ही मेरी ऋषा से दोस्ती हो गई। एक प्रोजेक्ट में टीचर ने हम दोनों को एक साथ रखा। काम खत्म होते ही ऋषा अपनी फैवरेट बुक लेकर बैठ जाती थी। उन दिनों 'हैरी पॉटर' सिरीज़ की फर्स्ट बुक रिलीज़ हुई थी। ऋषा उस बुक की बहुत बड़ी फैन थी। ऋषा ने 'हैरी पॉटर' की मैजिकल दुनिया के साथ-साथ रीडिंग की मैजिकल दुनिया से भी मेरा परिचय

करवाया। ऋषा कहती कि यदि उसकी फैवरेट बुक उसके पास हो तो उसे किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं पड़ती। बुक पढ़ते ही वह खुशियों की दुनिया में पहुँच जाती है।

मुझे पता ही नहीं चला कि कब मुझे भी ऋषा की तरह बुक्स की कंपनी अच्छी लगने लगी। ऐसा नहीं था कि मुझे उन पॉप्यूलर लड़कियों की कंपनी छोड़ देनी थी। मेरे पास पैसे थे और पैसे खर्च करने के प्लान्स भी थे। पर फिर भी रोज़ रात को डायरी में मैं एक ही बात लिखती। फैवरेट फूड खाने के बावजूद भी, फैवरेट चीज़ें खरीदने के बावजूद भी मुझे उन लड़कियों की कंपनी में इतना मज़ा नहीं आता था जितना मुझे ऋषा की कंपनी में आता था। ऐसा क्यों था? एक रात डायरी लिखते समय मुझे इसका जवाब मिला। ऋषा की कंपनी में, मैं जैसी हूँ वैसी ही रहती थी। मुझे उसके सामने कोई 'शो ऑफ' नहीं करना पड़ता था, क्योंकि वह मुझे मेरे जैसी ही लगती थी। और दूसरी लड़कियों की कंपनी में मैं उनके जैसी बनने की कोशिश करती थी और ऐसा करते-करते मैं थक जाती थी। डायरी लिखते समय मुझे पॉकेट मनी खर्च करने का एक नया आइडिया आया। हज़ार रुपए में से तीन सौ तो मैंने खर्च कर दिये थे, लेकिन सात सौ तो बाकी थे न!

"वाउ मैडम, यानि आपकी फ्रेंड ने आपको रीडिंग की दुनिया से इन्ट्रोडक्शन (परिचित) करवाया था! लेकिन आपने पॉकेट मनी खर्च करने का क्या प्लान बनाया था?" छोटी सी बच्ची ने उत्साह से पूछा।

आर्या ने हंसकर जवाब दिया, "हाँ, मैं वह प्लान को जल्द से जल्द बताना चाहती थी। लेकिन मुझे सोमवार तक प्रतीक्षा करनी पड़ी। सोमवार सुबह स्कूल पहुँचते ही मैं ऋषा को ढूँढने लगी लेकिन मैडम हॉल के कोने में जाकर बैठी थी और लेक्चर शुरू हो गया था। शहर के सब से प्रसिद्ध डॉक्टर हमारे स्कूल में गेस्ट लेक्चर देने आए थे। लेक्चर पूरा होते ही मैं भागकर ऋषा के पास गई। जब मैंने ऋषा को अपनी पॉकेट मनी में से खरीदी हुई बुक गिफ्ट की तब उसकी खुशी देखकर मुझे डबल खुशी हुई।

ऋषा ने मुझसे कहा, "यु नो आर्या, अ बुक इज़ द बेस्ट गिफ्ट एवर। बुक एक ऐसी गिफ्ट है जिसे आप बार-बार ओपन कर सकते हो!"

उसी समय कोई ऋषा को बुलाने आया, "ऋषा, तुम्हारे

डैडी, डॉक्टर धर्मदर्शी, तुम्हें बुला रहे हैं!"

यह सुनकर मुझे बहुत आश्चर्य हुआ। ऋषा के डैडी शहर के सब से बड़े डॉक्टर थे। यानि ऋषा की फैमिली बहुत पैसे वाली थी। हो सकता है कि ऋषा को मुझसे भी ज्यादा पॉकेट मनी मिलती हो लेकिन मुझे कभी ऐसा नहीं लगा कि ऋषा मुझसे अलग है। बल्कि ऋषा ने कभी ऐसा लगने नहीं दिया। उसने कभी उन पॉप्यूलर लड़कियों की तरह अपने पैसे का रौब दिखाकर मुझे दुःख नहीं दिया। "अगर मुझे भी कभी ज्यादा पॉकेट मनी मिलेगी तो मैं भी ऋषा की तरह अपने फ्रेंड्स को खुशी मिले इस तरह उनके साथ उनके जैसे बनकर रहूँगी।" उस रात मैंने डायरी में लिखा था।

"तो यह थी मेरी रीडींग जर्नी (सफर) की शुरुआत!" यह कह कर आर्या ने माइक एक तरफ रख दिया। छोटी सी बच्ची ने फिर पूछा,

"लेकिन मैडम, क्या नाना जी के कॉन्टेस्ट में आप विनर बने? आपने बाकी के पैसों का क्या किया?"

मिस आर्या हँसने लगीं, "इसका मतलब तुम ध्यान से स्टोरी सुन रही थी। वेल, नहीं! मैं विनर नहीं थी।" आर्या ने कहा, "मेरा कज़िन विनर बना था, जिसने सब से अधिक पैसे बचाए थे और साथ ही अपने भाई-बहन और मम्मी-पापा के लिए मनपसंद चीज़ें खरीदी थीं। मेरे बाकी बचे हुए पैसों में से मैंने अपने और नाना जी के लिए बुक्स खरीदी थी।"

बातचीत खत्म होने के बाद आर्या ने बच्चों की बुक्स में साइन करना शुरू किया। उस छोटी सी बच्ची का नंबर आया। अपनी कॉपी टेबल पर रखकर उसने कहा, "मैंने यह बुक अपनी पॉकेट मनी से खरीदी है।" यह सुनकर, मिस आर्या को बहुत अच्छा लगा।

मिस आर्या ने पूछा, "क्या नाम है तुम्हार, स्वीटी?"

'अनन्या।'

"डियर अनन्या, मेरी इच्छा है कि तुम भी अपने गोल्डन विंग्स (सुनहरे पंख) ढूँढकर लाइफ में बहुत ऊपर तक उड़ो," मिस आर्या ने बच्ची की बुक में लिखा और अपनी साइन की।

My Creation

आपके मनपसंद कलर पेपर में से, आपकी पॉकेट मनी के लिए इस तरह 3 Coin Box बना सकते हैं।

1) Spend (खुद के लिए खर्च करना।)
2) Share (दूसरों के लिए खर्च करना।)
3) Save (बचत)

चलो खेलें

1

अनन्या के पास चार प्रकार के सिक्के हैं, जिसे दिए गए चौकोर में इस तरह सेट करें कि सीधी या आड़ी लाइन में एक से ज्यादा नहीं होने चाहिए। तो आप सेट करने में हेल्प करें।

2

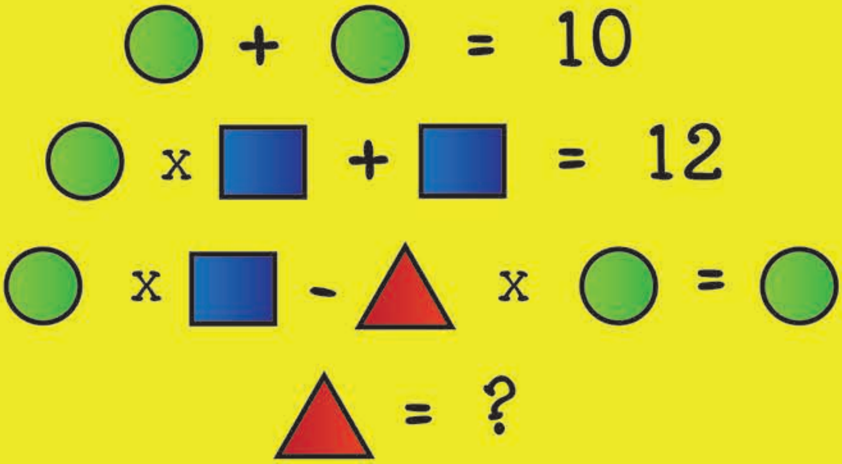

पास में दी गई पझल सॉल्व करें।

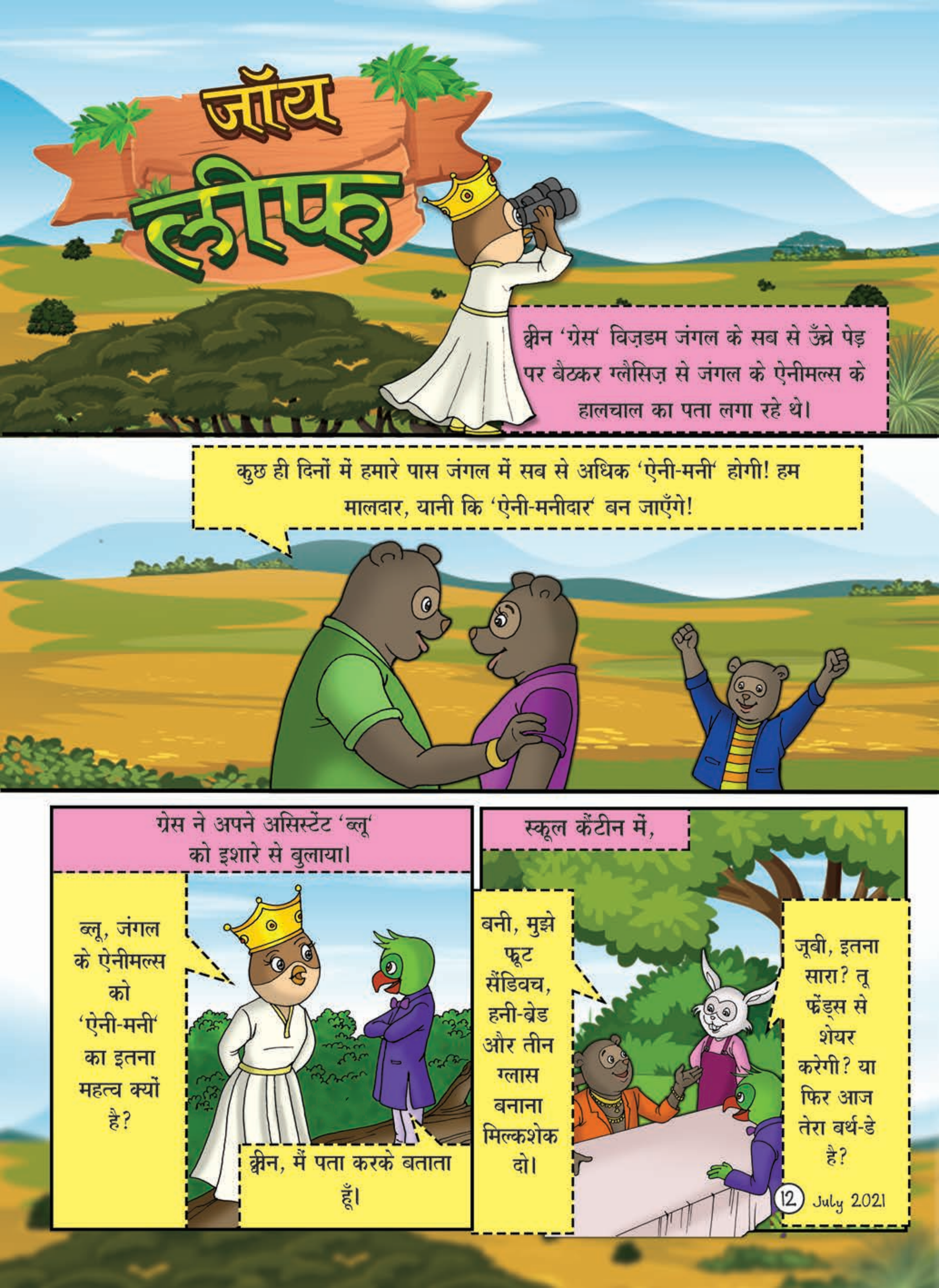
जॉय लीप्स
क्वीन 'ग्रेस' विज़डम जंगल के सब से ऊँचे पेड़ पर बैठकर ग्लैसिज़ से जंगल के ऐनीमल्स के हालचाल का पता लगा रहे थे।
कुछ ही दिनों में हमारे पास जंगल में सब से अधिक 'ऐनी-मनी' होगी! हम मालदार, यानी कि 'ऐनी-मनीदार' बन जाएँगे!
ग्रेस ने अपने असिस्टेंट 'ब्लू' को इशारे से बुलाया।
ब्लू, जंगल के ऐनीमल्स को 'ऐनी-मनी' का इतना महत्व क्यों है?
क्वीन, मैं पता करके बताता हूँ।
स्कूल कैंटीन में,
बनी, मुझे फ्रूट सैंडविच, हनी-ब्रेड और तीन ग्लास बनाना मिल्कशेक दो।
जूबी, इतना सारा? तू फ्रेंड्स से शेयर करेगी? या फिर आज तेरा बर्थ-डे है?

शेयर? नहीं, बिल्कुल नहीं! मेरे पास अगर 'ऐनी-मनी' हो तो मैं क्यों खर्च नहीं करूँ!? 'मनी' स्पेंड करके मुझे खुशी मिलती है। सिंपल!
सेली, तू खाएगी?
चीज़! मेरे पास सिर्फ दो ही 'ऐनी-मनी' नोट्स हैं। जूबी जितने ऑप्शन्स कहाँ हैं मेरे पास?
लेकिन तुझे चीज़ अच्छा लगता है न सेली!
यदि मेरे पास भी जूबी जितनी 'ऐनी-मनी' होती तो मैं भी उसकी तरह हैप्पी होती!
क्वीन ग्रेस के पास पहुँचकर,
क्वीन, जंगल के ऐनीमल्स को ऐसा लगता है कि 'ऐनी-मनी' से ही खुशी मिल सकती है।
वास्तव में?!
थोड़ा सोचकर,
कल सनसेट के समय सभी को वॉटर फॉल के पास बुलाया जाए।
आज से हम जंगल में 'ऐनी-मनी' की नोटबंदी कर रहे हैं। यह करंसी (पैसे की नोट) अब नहीं चलेगी।
!!!
!!!
!!!

सभी ऐनीमल्स को एक समान पत्तों वाला 'जॉय-लीफ' प्लांट दिया जाएगा। जब चाहिए तब 'जॉय-लीफ' खर्च करके आप खुश हो सकते हो। यदि खुशी ही चाहिए तो 'ऐनी-मनी' की क्या ज़रूरत है?
और 'जॉय-लीफ' खत्म हो जाए तो?
तो उसे उगाने की ज़िम्मेदारी आप लोगों की होगी!
कुछ दिनों बाद, सभी के 'जॉय-लीफ' खत्म होने वाले थे। लेकिन किसी को भी फिर से पत्ते उगाने का तरीका नहीं पता था। 'जॉय-लीफ' के पत्ते उगाने के सभी तरीके व्यर्थ गए।
मेरे जॉय-लीफ तो खत्म हो गए। लोगों को खाते देखकर ही पेट भरना पड़ेगा।
जूबी चल मेरे साथ। (कैंटीन वाले खरगोश से) : मुझे फोर चीज़ सैंडविच और जूबी के लिए एक हनी सैंडविच दो।

ऐसा मत कर। तेरे 'जॉय-लीफ' खत्म हो जाएँगे।
वैसे भी कल खत्म हो ही जाएँगे तो आज ही खत्म हो जाएँ तो क्या फर्क पड़ता है। लेकिन मैं और जूबी साथ में नाश्ता तो कर सकेंगे न!
यदि मुझे 'जॉय-लीफ' मिलेगी तो मैं भी तेरे लिए खर्च करूँगी!
दूसरे दिन जंगल में,
क्या यह बात सच है?
हाँ, हाँ सच है।
जूबी और सेली के प्लांट में फिर से 'जॉय-लीफ' उग रहे हैं।
शाम को वॉटरफॉल के पास,
ये कैसे हुआ?
सेली ने खुद के लिए सोचे बगैर जूबी के लिए अपने 'जॉय-लीफ' खर्च किए। और जूबी ने सच्चे दिल से सेली के लिए प्रेयर की कि अगर उसे 'जॉय-लीफ' मिलेंगी तो वह सेली के लिए खर्च करेगा।
खुशी 'मनी' (पैसों) से नहीं खरीदी जा सकती। खुशी तो इस बात पर आधारित है कि मनी का उपयोग किसलिए किया गया? खुद के स्वार्थ के लिए या दूसरों के सुख के लिए!

बनो सेली के फ्रेंड

देखा मित्रों, सेली ने जूबी के बारे में सोचा। खुद की खुशी के बारे में नहीं! लेकिन क्या सेली पहले से ही इतनी समझदार थी? नहीं!!! अरे, एक दिन तो जूबी का अच्छा सा जैकेट देखकर सेली ने भी अपने मम्मी-डैडी से वैसा ही जैकेट लाने की ज़िद की थी। फिर क्या हुआ?

यह तो आपको हमें बताना है। सेली की छोटी सी कहानी लिखकर हमें बताना है कि सेली ने अपनी ज़िद क्यों छोड़ दी? यदि आपको इस स्टोरी के कैरेक्टर बनकर, सेली के फ्रेंड बनकर सेली से कुछ कहना हो तो आप उससे क्या कहोगे?

आपकी छोटी सी कहानी हमें akramexpress4kids@mail.com पर ई-मेल करना। हम प्रतीक्षा करेंगे। आपके द्वारा भेजी गई कहानियों में से एक कहानी पसंद की जाएगी और अगले महीने

आपके द्वारा भेजी गई कहानियों में से एक कहानी पसंद की जाएगी और अगले महीने के अंक में छापी जाएगी।

मेरे ज्ञानी

दादाश्री ने पहले से ही संतोषपूर्वक बिज़नेस किया था। कम कमाई में भी दादाश्री को बहुत ही संतोष रहता था। उन्हें पैसों के बदले 'अच्छे संग' की अधिक कीमत थी। इसीलिए उनके पार्टनर के अलावा दूसरे लोग दादा को लाखों रुपये की ऑफर देते तो भी वे स्वीकारते नहीं थे। उनके पार्टनर जैसे उच्च गुण दूसरे लोगों में नहीं थे। दूसरे लोगों के संग से खुद को कुसंग न लग जाए, वह दादाश्री के लिए ज्यादा महत्वपूर्ण था!

दादा कहते कि जैसे हम शरीर में नाक, कान, आँख और दाँत सभी की समान देखभाल करते हैं, किसी एक ही चीज़ की ज्यादा देखभाल नहीं करते, वैसे ही जीवन में सिर्फ पैसों के पीछे नहीं भागना चाहिए।

दादा को पहले से ही यह पता था कि बंगला, गाड़ी आदि ऐसे सभी बाह्य सुख अंत में अंदर के सुख और शांति को नष्ट कर देते हैं। कई लोग दादा से कहते, "मामा की पोल में अपने सर्कल में सभी ने गाड़ी खरीद ली है। सिर्फ आपके पास ही गाड़ी नहीं है।" लेकिन दादा कभी भी दूसरों के कहने से या दूसरों का देखकर बाह्य सुखों को पाने की प्रतिस्पर्धा नहीं करते थे। दादा को तो मामा की पोल में ही शांति लगती थी। अपने छोटे से कमरे में ही आनंद महसूस होता था। वे खुद की समझ के अनुसार वे खुद की बाउंड्री में रहते जहाँ उन्हें कभी दुःख महसूस ना हो!

दादाश्री ने जीवन में कभी भी किसी से पैसे नहीं लिए। बल्कि वे अपने व्यापार की कमाई से भक्तों को फ्री ऑफ कॉस्ट यात्रा करवाते थे!

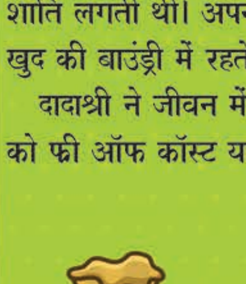

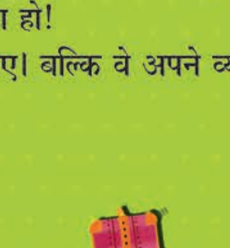

ऐतिहासिक गौरवगाथा

कोशला नामक एक छोटा सा गाँव था। उस गाँव में एक ब्राह्मण रहता था। उसका नाम मुकुंद था। कहा जाता है कि ब्राह्मणों पर माता सरस्वती की असीम कृपा होती है। वे हर तरह की विद्याएँ जानते हैं। लेकिन जन्म से ब्राह्मण होते हुए भी मुकुंद को तो जैसे माता सरस्वती जैसे भूल ही गई थीं। मुकुंद को पढ़ना-लिखना बिल्कुल भी नहीं आता था। उसे देखकर किसी को ऐसा नहीं लगता था कि वह ब्राह्मणपुत्र है।

मुकुंद के पास न तो विद्या थी और न ही धन था। वह तो मेहनत-मजदूरी करके जैसे-तैसे अपना गुजारा करता था। वैसे तो वह अपना ज्यादातर समय आलस करने, घूमने-फिरने और गप्पें मारने में ही निकाल देता था।

एक दिन गाँव में स्कंदिलाचार्य नामक एक बड़े आचार्य आए। उनकी वाणी इतनी मधुर थी कि सुनते ही अंतर में उतर जाए।

मुकुंद ब्राह्मण ने वह वाणी सुनी और उसके अंतर के द्वार खुल गए। उसे लगा, "इस जनम में न तो विद्या मिली और न ही धन मिला। और उम्र क्या किसी का इंतज़ार करती है? इसी तरह कहीं पूरी ज़िंदगी हार जाने की बारी न आ जाए! तो फिर धर्म के मार्ग पर चल कर अपने आत्मा का उद्धार क्यों न कर लूँ? इतने उच्च ज्ञान की खान जैसे ऐसे गुरु ढूँढने से भी नहीं मिलेंगे!" और मुकुंद ने आचार्य के पास दीक्षा ग्रहण कर ली।

मुकुंद मुनि ने देखा कि उनके सभी साथी अनेक विद्याएँ जानते थें और रात-दिन पढ़ने में लगे रहते थे। उन्हें लगा, "मैं भी विद्वान क्यों नहीं बन सकता? मेहनत करूँगा तो ज़रूर फल मिलेगा।"

और मुकुंद मुनि पढ़ाई में लग गए।

यह देखकर दूसरे मुनि उनका मज़ाक उड़ाने लगे, "इतनी बड़ी उम्र में कैसे ज्ञान मिलेगा?"

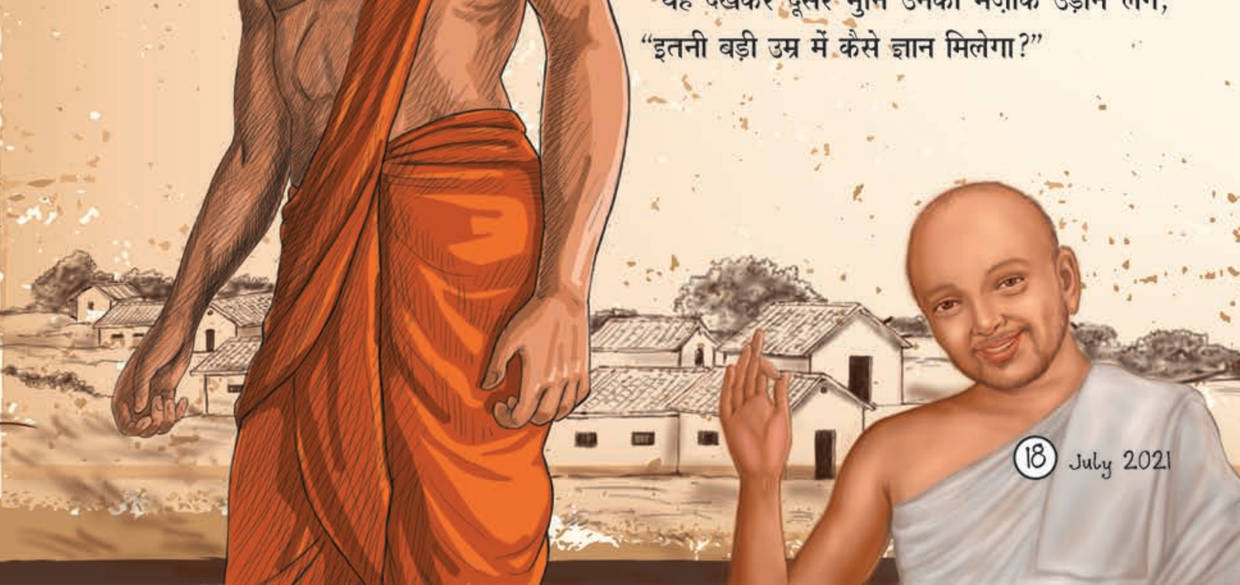

लेकिन मुकुंद मुनि को किसी के मज़ाक उड़ाने की कोई परवाह नहीं थी। रात को जब सभी सोने जाते तब वे एकांत में बैठकर ऊँची आवाज़ में शास्त्रों का पाठ याद करने की कोशिश करते थे। रात की शांति में उनकी आवाज़ दूर-दूर तक सुनाई देती थी।

थोड़े दिन तक तो कोई कुछ नहीं बोला। लेकिन फिर साथी मुनियों ने नींद में विघ्न पड़ने की शिकायत की।

एक दिन गुरु ने मुकुंद मुनि को समझाया, "मुनि, रात को ज़ोर-ज़ोर से बोलकर किसी की नींद खराब करना उचित नहीं है। और फिर अगर कोई हिंसक प्राणी जाग जाएगा तो बेवजह अनर्थ हो जाएगा।

लेकिन मुकुंद मुनि को विद्वान बनने की ग़ज़ब की धुन सवार थी। इसलिए वे रात के बजाय दिन में, ज़ोर-ज़ोर से बोलकर पाठ याद करने लगे। उनके साथी मुनियों ने फिर से शिकायत की, "उफ़, कितना शोर! कान फट जाएँ ऐसा!"

मुनि ने मज़ाक में कहा, "मुकुंद मुनि तो बहुत बड़े विद्वान बनने वाले हैं। इतने बड़े विद्वान कि किसी से पिछे नहीं रहेंगे। और देखना ना, कुछ ही दिनों में इतने बड़े पंडित बन जाएँगे कि अपनी पंडिताई के बल से खंभे पर फूल खिलाएँगे!"

ये शब्द मुकुंद मुनि के कान में पड़े और उन्हें ज़बरदस्त आघात लगा, लेकिन वे कुछ नहीं बोले। उन्हें लगा, "कुछ भी बोलकर बात को बिगाड़ने की बजाय ऐसा करके दिखाना उचित होगा।"

और वे दिन-रात अभ्यास करने में जूट गए। उनके अभ्यास ने जैसे माता सरस्वती का दिल पिघला दिया हो और वे विजयी हुए। एक दिन ऐसा आया कि देखने वाले देखते रह गए और उन पर हँसने वाले शर्मिंदा हुए। वास्तव में, उनकी मुर्खता के खंभे पर सच्ची पंडिताई के सुंदर और सुगंधित फूल खिल उठे।

इस तरह, खुद की मेहनत के बल से मूर्ख विद्यार्थी जैसे मुकुंद मुनि बड़े पंडित बन गए। जैन संघ ने उन्हें 'वृद्धवादी' कहकर संबोधित किया है।

मुकुंद मुनि के गुरु, स्कंदिलाचार्य ने धर्म और संघ की रक्षा का भार दूसरे मुनियों के बजाय वृद्धवादी को सौंपकर उन्हें साधुसंघ का मुखिया बना दिया।

Akram Express
July 2021
Year : 9, Issue : 3
Conti. Issue No.: 100

BALVIGNAN

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111

अंत में

एक दिन टीचर ने बच्चों को विश्व के सात आश्चर्य (seven wonders of the world) लिखने के लिए कहा। आपस में थोड़ी बातचीत के बाद बच्चों ने एक लिस्ट तैयार की, जिसमें था-ईजिप्ट के ग्रेट पिरामिड, ताजमहल, ग्रेंड कैनियन, एम्पायर स्टेट बिल्डिंग आदि।

एक छोटी बच्ची का पेपर खाली था। टीचर ने उससे पूछा, "क्या हुआ? लिस्ट बनाने में परेशानी हो रही है?"

बच्ची ने कहा, "हाँ टीचर। मुझे समझ में नहीं आ रहा कि मैं इतने सारे आश्चर्यों में से कौन सा लिखूँ?"

टीचर ने कहा, "तुम हमें बताओं कि तुमने कौन से आश्चर्य सोचे हैं? शायद हम तुम्हारी कुछ मदद कर सकें।"

बच्ची ने कहा, "मुझे लगता है कि विश्व के सात आश्चर्य हैं, १) देखना २) सुनना ३) स्पर्श करना ४) चखना ५) सीखना-अनुभव करना ६) हँसना और ७) प्रेम"

क्लास रूम में एकदम शांति हो गई। जगत् में जो सब से कीमती चीज़ें हैं, वह न तो मनुष्य बना सकता है और न ही खरीद सकता है। मज़े की बात यह है कि हम सभी के पास ये आश्चर्यजनक चीज़ें हैं। तो पॉकेट मनी मिले या न मिले, कम मिले या ज़्यादा मिले, उसकी कीमत नहीं है। कीमत तो हमारे पास जो आश्चर्य है, उनको समझकर आनंद में रहने की है।

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद # हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. AGIA4313# और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद ## हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. AGIA4313## अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर Whatsapp करें।

१. कच्ची पावती नंबर या ID No., २.पूरा ऐड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगेज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Publisher, Printer & Editor - Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
Printed at Amba offset :- B-99 GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025